Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 011 Issue 01-02 JAN-FEB 2025 Pages 20 A.S. Rs 100

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at CETTM-MTNL, Powai

स्वामिश्रीजी

Wishing you all a Happy, Healthy, Prosperous and Blissful New Year 2025.

सत्संग समाचार

❊ मंगलवार, दि. ७ जनवरी, सन् २०२५ की प्रथम भजन संध्या चांदिवली में Megarugas Hall में गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में विशिष्ट भजनों के साथ मनाई गई।

Bhajan Sandhya at Megaragus Hall, Chadivali-Powai

प.पू. भरतभाई ने अपने आशीष में कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज के पास जो भी आता उसे वे प्रेम से आवकारते थे। वैसे हमारे पास जो भी आता है वो सत्संगी है उस भाव से हमें उसका स्वागत करना चाहिए। कभी भी ऐसा नहीं मानना चाहिए कि सत्संग में आने से हमारा समय बर्बाद हो गया। सत्संग हमेशा हमें ऊपर उठाता है। हमें समझमें नहीं आता लेकिन गुणातीत सत्पुरुषों के संबंध से सहज ही हमारी प्रगति होती ही है। काकाजी के संबंध में जो भी आया उसे बहुत बडा फायदा ही हुआ है। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी तथा आज जो प्रगट संत मिले है वो हमारे लिये सबसे बडी भेट है। २०२५ की प्रथम भजन संध्या में हम इतना तो पक्का करें कि हम Online तो हर ७ तारीख भजन संध्या जरुर से भरे और काकाजी की स्मृति में ज्यादा डूबे। भगवानने हमें मनुष्यदेह देकर हम पर बहुत बडी कृपा की है। तो हमें जो स्वरुप मिले है वे कैसे राजी हो वही हमें करना है। तो हम ऐसे गुणातीत स्वरुपों के माहात्म्य में डूबे रहे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने अपने आशीष में कहा कि भजन संध्या का हमारा भाव एक ही होता है कि हम जो भी भजन-प्रार्थना करें वह गुरुहरि काकाजी ग्रहण करके हम पर राजी हो

जाये। ऐसे गुणातीत सत्पुरुष राजी हो तो जो भी तकलीफ आनेवाली होती है वो हट जाती है। भजन संध्या करते-करते आज ४० साल होने आया है। जैसे Medical Science में कुछ बातें निश्चित होती है और कुछ आती-जाती रहती है, वैसे ही आध्यात्मिकता में भी कुछ चीजें निश्चित होती है तो कुछ आती-जाती रहती है। मानवता में एक चीज निश्चित है - करुणा। वो कभी बदल नहीं सकती। हम हमारे दुश्मन के प्रति भी करुणा का भाव रखेंगे तो उसका स्वभाव का परिवर्तन जरुर होगा। हम सत्संग से जुडे रहे और गुणातीत संतों का आशीर्वाद में डूबे रहे। उससे हमारा Chart बदल जायेगा। तो ऐसे प्रगट संतों की छत्रछाया में हम सत्संग करते रहे वही प्रार्थना।

Bhajan Sandhya at Megaragus Hall, Chadivali-Powai

इस उपलक्ष्य में डॉ. कोनराड वास, डॉ. भावेश वजीफदार और डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्ट का सन्मान किया गया। इस उपलक्ष्य में BJP Corporator श्री. सुशांत सावंतजी का भी अभिवादन हुआ। आज के इस अवसर पर चांदिवली के विधानसभ्य श्री. मामा दिलीप लान्डेजी खास पधारे थे। साथ ही प.भ. हेमंतभाई मर्चन्टने योगी डिवाईन सोसायटी संस्था के लिये जो अद्भुत सेवा की उस उपलक्ष्य में उन्हें विशिष्ट स्मृतिभेट के साथ सन्मानित किया गया।

With MLA Shri. Dilip Landeji (Chandivali)

❊ सोमवार, दि. १३ जनवरी को पोषीपूनम, गुणातीतानंदस्वामी दीक्षादिन पर्व और अनुपम मिशन-मोगरी मंदिर का ५वाँ पाटोत्सव संतभगवंत साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. अश्विनभाई, प.भ. घनश्यामभाई अमीन, प.भ.डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्ट, प.भ. परेशभाई परमार और स्थानिक संतभाईयों, हरिभक्तों की उपस्थिति में अनुपम मिशन में भक्तिभाव से मनाया गया।

Poshi Poonam celebration at Anoopam Mission, Mogri

Poshi Poonam, Gunatitanandswami Dikshadin and Anoopam Mission Temple Patotsav-Mogri

❊ मंगलवार, दि. १४ जनवरी मकरसंक्रांति का पर्व और प.पू. ज्योतिबहन का स्मृतिदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

Jholi Utsav at "Akshardham" Temple, Powai

प.पू. वशीभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजीने हमारे लिये सत्संग करना बहुत सरल बना दिया। केवल एक ही आज्ञा की कि 4 Point Programme करो। हम सब काम करेंगे लेकिन भजन ही नहीं करते। अब समय नहीं गवाते हुए हमें तैयार होना है। आज मकरसंक्रांति का दिन है। भगवान कभी भक्त के पास कुछ मांगता नहीं है, वो तो केवल देनेवाले है। झोली में हमारे जो स्वभाव नडते है उसे दान में देना है।

आज हम ज्योतिबहन का स्मृतिदिन मना रहे है। सोनाबा के पूरे परिवार को बहुत धन्यवाद है। सबकुछ सहन करके योगीबापा की एक आज्ञा पर बहनों को भगवान भजने का मार्ग सरल बना दिया। ज्योतिबहन और ताराबहनने मिलकर इस कार्य को ज्यादा आगे बढाया। ये सत्संग और गुणातीत संत हमें चिंतामणी तुल्य के रुप में मिले है। अब हमें भी नई सोच और नई दृष्टि के साथ आगे बढना चाहिए। तो भगवान सभी की झोली आनंद से भर दे वही प्रार्थना।

गुरुहरि काकाजीने मकरसंक्रांति के जो आशीर्वाद लीखे थे वह **प.पू. भरतभाई ने** पढे। उन्होंने कहा कि उतरायण के दिन सूर्य दिशा बदलता है। वैसे हमें हमारी सही दिशा की ओर आगे बढना है। अगर भगवान कुराजी हो उस दिशा में चले गये हो तो हमारी दृष्टि बदलकर हमें वापस सही मार्ग पर चलना है। आज के दिन सभी आकाश में पतंग उडाते है। हमें भी हमारी डोर प्रभु के हाथ में देनी है। उनकी मर्जी के मुताबिक वो हमें जहाँ लेकर जाये वहाँ हमें जाना है। आज महाराष्ट्र में सभी तिलगुळ बनाकर सभीको खीलाते है। वैसे हमें वाणी में मीठाश रखनी है। जो भी तकलीफ है वो वाणी की वजह से ही है। आज के दिन जो दान करें वह गुप्तदान के रुप में करना होता है। किसीको दिखाने के लिये हमें दान नहीं करना है। हमारे जो भी स्वभाव भगवान भजने बीच में आते है उसे हमें दान में देना है। हमें ऐसा जीवन जीना है कि हमारे गुरु को हम पर गर्व होना चाहिए। तो हम गुणातीत स्वरुपों को राजी कर ले वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने अपने आशीष में कहा कि जितना हम सबका महिमा समझेंगे उतना ज्यादा फायदा होगा। दुर्वासा ऋषिने कुंती को पाँच वरदान दिये थे। उससे कुंतीने सूर्यनारायण को प्रार्थना की तो कर्ण का जन्म हुआ था। वैसे हम सूर्य को देखे तो छोटा दिखता है। महाभारत के समय पर शास्त्रकारोने ऐसा बताया कि यह तो सूर्य का स्थूल रुप है। वह भी एक तत्व, शक्ति एवं देवता है। जिसकी पहचान कुंताजीने

Jholi Sabha at Vapi

की तो उसका फल मिला। वास्तव में पृथ्वी घूम रही है, लेकिन सूर्य स्थिर ही है। गुणातीतानंदस्वामीने भी उनकी बात में कहा है कि एक दिन यह सूर्य मक्खी था। लेकिन संत की सेवा करने से, उनके आशीर्वाद से वो सूर्य बन गया। तो ऐसे हम भी सामान्य जीव होते हुए भी सूर्यरुप बन सकते है। हठ-मान-ईर्ष्या का भाव हमारे अंदर हमेशा के लिये नहीं होता। जब हम बडे पुरुष को दिव्य नहीं मानेंगे तो वह भाव कायम के लिये हमारे अंदर स्थिर हो जायेगा। इसलिये उनमें हमें दिव्यभाव रखेंगे तो हठ-मान-ईर्ष्या अपनेआप टल जायेंगे। बडे पुरुष को ऐसे दिव्य माने और अपने आपको दिव्य माने और परब्रह्म की भक्ति करें ऐसा बल हमें मिले वही आज के दिन प्रार्थना।

Jholi Sabha at Dombivali

इस दौरान मुंबई, महाराष्ट्र के कई स्थानों में संतभाईयोंने झोली निमित्त पधरामणी की और सत्संग का लाभ भी दिया।

Jholi Sabha at Sambhaji Nagar

Jholi Sabha at Rumla

Jholi Sabha at Khuzgaon and Kanheri Math - Kolhapur

Jholi Sabha at Pune

❊ अयोध्या में श्री राम मंदिर के प्रथम पाटोत्सव निमित्त बुधवार, दि. २२ जनवरी को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में विशिष्ट रेली का आयोजन हुआ, जिसमें बीजेपी के कई कार्यकर्ता भी जुडे थे।

Ayodhya Ram Mandir first Patotsav celebration at "Akshardham" Temple, Powai

❊ रविवार, दि. २६ जनवरी को गुरुहरि काकाजी महाराज का प्राकट्यस्थान नडियाद के 'प्रसादरज' मंदिर की मूर्तियों के १२वें पाटोत्सव निमित्त विशिष्ट महापूजा प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. इलेशभाई और अन्य संतभाईयों, गुणातीत ज्योत से डॉ.पू. नीलमबहन, पवई से पू. जयश्रीबहन और अन्य संतबहनों तथा हरिभक्तों की उपस्थिति में की गई। संतभाईयोंने विधिपूर्वक महापूजा करवाई।

Guruhari Kakaji Maharaj Birth Place "Prasadraj" Temple Patotsav at Nadiad

❊ शनिवार, दि. १ फरवरी को प.पू. भरतभाई का ७१वाँ प्रागट्यदिन पवई के **CETTM MTNL** के **Ground** में प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई और अन्य संतभाईयों, प.पू. आनंदीदीदी तथा अन्य बहनों और देश-विदेश के एवं स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में भक्तिभाव से मनाया।

सुबह में ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज तथा भरतभाई के प्रागट्यदिन निमित्त विशिष्ट महापूजा हुई। उसके साथ सभी संतबहनों द्वारा विशिष्ट हार भरतभाई को अर्पण हुआ।

'चैतन्य शिल्पना सौमिल शिल्पी...' संतवर्य पू. दासस्वामीजी रचित भजन की इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए मंच की सजावट भी की गई थी और पवई मंदिर का नया **Model** जिसमें दर्शाया गया था। इस चार नींव के स्तंभ है

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai

ऐसा सूचित किया गया था - (१) सुबह और शाम भजन (२) कथावार्ता (३) एक सत्कर्म (४) प्रायश्चित्तरुप प्रार्थना।

शाम को प्रारंभ में बालमंडलने विशिष्ट स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया।

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में पू. मननभाई, प.भ. वंदनभाई, प.भ. हेमंतभाई मर्चन्ट, प.भ. नरेशभाई मुले, प.भ. राकेशभाई (दिल्ली)ने भरतभाई के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया।

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at MTNL, Powai

इस उपलक्ष्य में पवई के सुप्रसिद्ध बिल्डर श्री. निरंजन हिरानंदानीजी भरतभाई को शुभेच्छा देने खास पधारे थे। पवई Police Station के Senior Officer श्री. सोनवणेजी भी इस अवसर पर खास आये थे।।

With Shri. Sonawaneji

With Shri.Niranjan Hiranandani

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज कई महानुभावों पधारे है उसके लिये धन्यवाद है। सूरत के परषोत्तममामाने इस अवसर में आने के लिये प्रयागराज महाकुंभ में जाने का कार्यक्रम स्थगित किया। संतभगवंत साहेबजीने कहा था उसी संदर्भ में कहता हूँ कि जो भी यहाँ आये है उन्हें हजार महाकुंभ स्नान का फल प्राप्त होगा। वचनामृत ग्रंथ के हर पन्ने पर संत की महिमा की बात लिखी है। गुरुहरि काकाजी महाराज को धन्यवाद देते है कि भरतभाई जैसे संत की हमें भेट दी। ऐसे स्वरुपों का प्रागट्यदिन होता है तो प्रभु का विशेष आशीर्वाद मिलता है। जैसे काकाजीने कहा था कि भरतभाई जैसे अन्य तैयार

हो गये वही मेरा सर्वोत्तम आनंद का दिन है। वैसे हम भरतभाई को राजी कर ले और उनके आनंद के दिन का हिस्सा बन जाये वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि दासस्वामीजीने जो भजन बनाया 'चैतन्यशिल्पना सौमिल शिल्पी...' उसके आधार पर आज यहाँ ये सूत्र लिखा गया है। उसके मुताबिक यहाँ जो चैतन्य स्वरुपों बैठे है वो हमारा घडतर करते है। वैसे गुरुहरि काकाजी महाराजने सामान्य सत्संगी जीव का भी काम किया। आज भरतभाई के प्रागट्यदिन पर संकल्प करें कि उनके जो गुण है उसमें से एक भी हम जीवन उतारे तो सच्चे अर्थ में हमने उनका प्रागट्यदिन मनाया ऐसा माना जायेगा। उनका सबसे बडा गुण यानि धुन। हमारे योगाचार्य डॉ. दिपकभाई के गुरु के गुरु कृपाल्वानंदस्वामीने बोला था कि आज तक के इतिहास में जो भी चमत्कार होते है, हो रहे है और भविष्य में जो होंगे वो सारे धुन के प्रताप से संभव हुए है। तो उनकी धुन करने की Technique हमें आज लेकर जाना है। हम धुन करने बोलते है तो सब कहते है हमारे पास समय नहीं है। तो जो भी क्रिया कर रहे है वो करते-करते हमें धुन करनी है। वैसे हररोज नियमित धुन तो करनी ही है। तो उसकी आदत हम डाले वही प्रार्थना।

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at MTNL, Powai

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गुरुजी हमेशा हमें Surprise देते है। वैसे इसबार भी गुरुहरि काकाजी का जैसे आदेश हो ऐसा मानकर इस साल भी हमारे बीच वे विराजमान है। एकबार तारदेव मंदिर में काकाजी के साक्षात्कार की सभा थी तब गुरुजी भी पधारे थे तो वे तारदेव की सीडी चढ रहे थे तब घनश्यामभाई का बेटा दर्शन छोटा था और गुरुजी के आगे चढ रहा था। गुरुजीने उसे पूछा कि तुं कहाँ जा रहा है? उसने एकदम से कहा कि काकाजी का साक्षात्कार का समैया हो और मैं न जाऊँ? तो वैसे गुरुजी को हुआ कि भरतभाई का प्रागट्यदिन हो और मैं पवई न जाऊँ? ऐसे वो खास यहाँ पधारे उसका अलग ही आनंद हो रहा है। जैसे Indian Idol में जज कुछ लोगों को चुनकर अंत में विजेता एक को घोषित करते है वैसे काकाजीने हमें चुना और गुणातीत संतों की गोद दी, वह बहुत बडी बात है। सबकुछ करनेवाले काकाजी

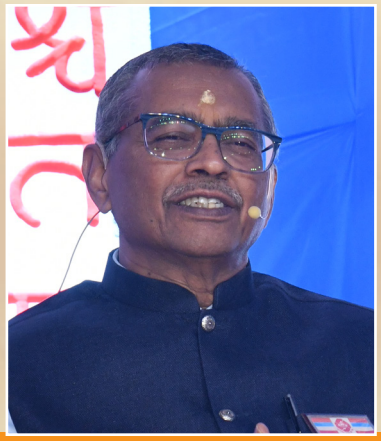

है और नाम हमारा हो रहा है। काकाजीने जब गणेशपुरी शिबिर की थी तब उनकी गाडी में एक युवक के लिये जगह खाली थी, उस समय १०-१५ युवकों में से महेन्द्रबापुने मुझे काकाजी के साथ जाने को कहा। काकाजीने देखा कि बापु की नजर में मैं हूँ उसमें काकाजी की दृष्टि सहज ही मिल गई। तो आज ऐसा महसूस हो रहा है कि यहाँ गुरुजी के रुप में काकाजी ही हमें आशीर्वाद देने पधारे है।

कच्छुएँ और खरगोश की कहानी तो हम सभी को पता ही है। उसके मुताबिक जब पहली दौड में धीरे-धीरे चलकर भी कच्छुआ जीत गया तब ऐसा सूत्र बोला कि Slow and steady wins the race. उसके बाद वापस दौड हुई तो उसमें खरगोश पहले ही पहुँच गया और जीत गया तो ऐसा सूत्र बोला गया कि Fast and steady wins the race. फिर वापस दौड रखी गई उसमें ऐसा कहा गया था कि पानी के उस पार जो पहले पहुँचेगा वो जीतेगा। तो खरगोश कच्छुएँ के ऊपर बैठ गया और दोनों नदी के उस पार जल्दी पहुँच गये। वो ऐसा सुहृदभाव हमें दृढ करना है।

काकाजी हमेशा कहते थे कि मूर्ति भूलो नहीं। भगवान को आगे रखकर हमें हर कार्य करना है। काकाजी जो गुणातीत ज्ञान की बातें बताते थे वो हमें २४ घंटे याद करते रहना है। तो हम हमेशा आनंद करते रहे वही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने आशीष देते हुए कहा कि आशीर्वाद देने की बात आई तो मुझे स्वामीजी की एक बात याद आई कि एक सेवक को किसीने कहा कि ये गुणातीतानंदस्वामी बहुत बडे साधु है, अगर उनके आशीर्वाद मिल जाये तो हमारे स्वभाव-प्रकृति सब टल जायेंगे। उस हेतु से वो स्वामी के पास गया तो उन्होंने कहा कि हम भगवान की मर्जी में रहेंगे तो भगवान आशीर्वाद देते ही है, मांगने नहीं पडेगा। फिर भी उस सेवकने जबरजस्ती स्वामी का हाथ पकडकर अपने माथे पर रखवाया। तो उन्होंने कहा कि ऐसे हाथ रखवाने से स्वभाव प्रकृति टलते नहीं है। वो तो स्वामी की आज्ञा के मुताबिक जितना बतार्व करेंगे तो ही स्वभाव टलेंगे और शांति होगी। आज के दिन कहना इतना ही है कि मुंबई में

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at MTNL, Powai

भरतभाई-वशीभाई काकाजी के वारसदार है। उनकी मर्जी के मुताबिक हम रहेंगे तो काकाजी के सहज ही आशीर्वाद मिल जायेंगे। तो हमें ऐसा बुद्धियोग मिले और इन दोनों संतभाईयों की आज्ञा में जीवन जीये और दूसरों को इस मार्ग में बढने सहाय करें वही प्रार्थना।

अंत में सभी मंडल की ओर से भरतभाई को भेट और हार अर्पण हुए।

प.भ.डॉ. दिपकभाई परमार और Yoga के तीनों बेच के सभी विद्यार्थीओंने भी भरतभाई का प्रागट्यदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में आनंदोत्सव के साथ मनाया।

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebrated by Yoga Batches at "Akshardham" Temple, Powai

उसी प्रकार ऑस्ट्रेलिया मंडलने भी प.पू. भरतभाई का प्रागट्यदिन भक्तिभाव से मनाया।

*** सोमवार, दि. ३ फरवरी को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई का २२वाँ पाटोत्सव और गुरुहरि काकाजी महाराज का ७३वाँ साक्षात्कार दिन प.पू. दिनकरभाई और सभी संतभाईयों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाया गया।**

सबसे पहले पू. हितेनभाई, प.भ. पियुषभाई खोरसियाने सभी संतभाईयों और हरिभक्तों के हस्त पाटोत्सव की विधि करवाई।

"Akshardham" Temple, Powai Patotsav and Guruhari Kakaji Maharaj Shakshatkar Din celebration

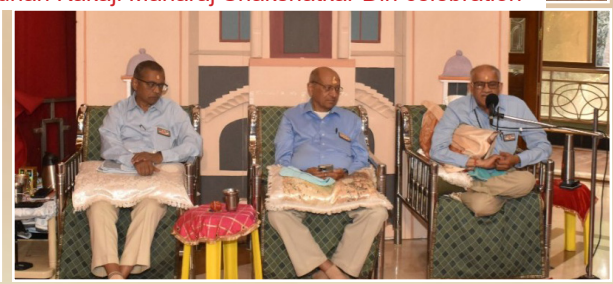

प.पू. दिनकरभाई और प.पू. भरतभाई के विशिष्ट आशीष का लाभ सभीको मिला और उसके बाद पाटोत्सव निमित्त ठाकोरजी को अन्नकूट अर्पण हुआ।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि आज पवई मंदिर का पाटोत्सव, गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन और पवई के साधक बहनों का भागवती दीक्षादिन। शास्त्रीजी महाराज के समय बहुत बडा समाज था फिर भी उन सब में से योगीजी महाराजने काकाजी को समाधि करवाई। उस समय मुंबई में काकाजी की अेग्री ओरियन्ट कंपनी का धंधा चालु था, योगीबापा गुजरात थे, उस समय युरोप से बडी स्टीमर भी आई थी, तब योगीबापाने काकाजी को गुजरात बुलाया। नंदाजी दो बार Prime Minister बनेंगे वह शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद की बात योगीबापाने काकाजी को बताई। उसका मतलब वे बैठ गये ऐसा नहीं, उनको चुनाव में जीताने के लिये काकाजीने बहुत परिश्रम किया। अगर हम भी ऐसा काकाजी के साक्षात्कार के प्रसंग को याद भी करेंगे तो यहाँ ही समाधि का अनुभव सहज हो जायेगा। उसके बाद उन्होंने पत्रसंजीवनी में से पत्र पढा।

Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज को साक्षात्कार हुआ उससे गुणातीत समाज की स्थापना तो हुई ही, लेकिन सत्संग का पूरा माहौल ही बदल गया। योगीजी महाराज दिखने में बहुत ही सामान्य साधु लगते थे, काकाजीने उनका सच्चा स्वरुप सबके सामने रखा। उसके बाद २० साल काकाजीने जो कार्य किया, जिससे सब चैतन्यों भी तैयार हो गये। योगीबापाने तीन मुख्य कार्य किये। **(१) रविसभा (२) पत्रलेखन और विचरण (३) सेवा-सरभरा।**

योगीबापाने हजारों को कंठी पहनाकर सत्संगी बनाया। सेकडों युवानों को साधु बनाये। लेकिन साक्षात्कार केवल काकाजी को ही करवाया। काकाजीने योगीबापा की पहचान करवाई जिससे आज हर जगह उनका महिमागान हो रहा है। काकाजीने महिमा की बातें बताकर सत्संग की हमारी गति बहुत ज्यादा बढाई। काकाजी की दूरंदेशी दृष्टि थी, वे २५ साल बाद क्या होनेवाला है उसके मुताबिक कार्य करते थे। बहनों भगवान भज सके उसके लिये सन् १९५२ से बहुत परिश्रम किया। आज बहनों सरलतापूर्वक भगवान भज रही है, वह सबसे बडी क्रांति आई। उसके बाद हमारे जैसे कर्मयोगी साधु को उन्होंने तैयार किया। काकाजी को एकबार कोई मिलता तो उनको कभी भी भूल नहीं सकता था। वे आनंद भी बहुत कराते थे और समजदारी भी सीखाते थे। हमारा सत्संग ज्यादा पक्का हो उसके लिये हमें महिमा की बातें करते थे। हमें पवई मंदिर की गरिमा को ज्यादा बढाना है। काकाजी का जीवनचरित्र 'अहो! गाथा गुणातीत विभुनी...'

ग्रंथ का निरंतर हमें पठन करना है, जिससे ब्रह्मरुप हो के परब्रह्म की भक्ति करने में हमारी गति ज्यादा बढेगी। काकाजी कहते थे कि यहाँ का पत्थर भी ब्रह्मरुप हो ऐसा बोलेगा। तो हम इस मंदिर की सुवास हर जगह फैलाये और वाणी से नापास न हो वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी के साक्षात्कार को तीन रुप से हम देख सकते है। **(१)** सामान्य **(२)** आध्यात्मिक **(३)** सुखमय और हितकारी रुप में। काकाजी को सभीका दिखता था और वो सामने बता देते थे। ऐसी गुणातीत स्थिति काकाजी को साक्षात्कार के बाद हो चुकी थी। साक्षात्कार में गोलोक, वैकुंठ, बद्रिकाश्रम ऐसे सारे धामों का दर्शन करके अंत में काकाजी अक्षरधाम पहुँचे थे। मैं ब्रह्मरुप हूँ, मैं दास का दास हूँ ऐसी भावनावाला समाज काकाजीने तैयार किया। सबकुछ जानते थे, बहुत ज्ञानी थे फिर भी सामान्य से सामान्य होकर हमारे बीच जीवन जीते थे। तो हे काकाजी! हम ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति सहज ही सिद्ध कर ले वही प्रार्थना।

❊ शुक्रवार, दि. ७ फरवरी की भजन संध्या संभाजी नगर में गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में प.पू. दिनकरभाई और सभी संतभाईयों, संतबहनों, स्थानिक एवं मुबंई के कईं हरिभक्तों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाई गई।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि हर भजन संध्या के अंत में हम गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में 'हे स्नेहलसिंधु...' गाते है। उस भजन के शब्दों इतने भावपूर्वक लीखे है कि आँख में आंसु आ ही जाते है। आज हेमंतभाई रचित नया भजन हमने सुना। उसमें प्रथम कडी में 'हे काकाजी, आपका उपदेश अमृत है...' तो ऐसी काकाजी की पाँच उपदेश की बातें हम जीवन में उतारने का प्रयत्न करेंगे। **(1) Intense Aspiration** – तीव्र अभीप्सा **(2) Do not consider the facts as they are, but go according to your inner conviction. (3) Irrespective of my thinking, liking, belief and conviction, O God! let thy should be done. (४) थोभो, थोभो, थोभो।** हम React बहुत जल्दी करते है, धीरजपूर्वक कार्य करना चाहिए। **(५) सत्संग खुद का होना चाहिए।** किसीने बोला है इसलिये हम सत्संग में आते है ऐसे नहीं चलता। यह सत्संग मेरा है और मुझे स्वयं अनुभव करना है। काकाजी हमेशा कहते थे कि हमें उधार का सत्संग नहीं करना है। तो ऐसे सत्संग हम दृढ कर ले वही प्रार्थना।

❊ शनिवार, दि. ८ फरवरी को संभाजी नगर में गुरुहरि काकाजी उद्यान में प.पू. भरतभाई का ७१वाँ प्रागट्यदिन प.पू. दिनकरभाई तथा सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा कईं हरिभक्तों की हाजरी में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

प्रारंभ में युवती और युवक मंडलने विशिष्ट नृत्य प्रस्तुत करके भरतभाई के चरणों में अपना भाव रखा।

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. कविताबहन वाघ, प.भ. शिल्पाबहन मुले, प.भ. चित्राबहन जहागीरदार, प.भ. राजुभाई वाढेर, प.भ. दीपकभाई जहागीरदार, पू. अक्षयभाई आहिर, पू. सिद्धिबहन ने भरतभाई के साथ के स्वानुभाव के प्रसंग बताकर अपना भाव उनके चरणों में रखा।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज का मुख्य विषय है – हाँ में हाँ कहना। ऐसे बर्ताव करने में जिंदगी पूर्ण हो जाती है। खुद का छोडकर जैसा गुरु बोले वैसा करना सरल नहीं होता। छोड देना, झूक जाना और पीघल जाना वही हाँ में हाँ की सच्ची यात्रा है। वो यात्रा भरतभाईने सिद्ध की। उनकी प्रकृति एकदम शांत है। यहाँ सूत्र लिख दिया, बडी तस्वीर लगा दी, लेकिन हाँ में हाँ यह बात को जीवन में उतारकर जीना है। भगवान की मर्जी में मिट जाना वही हमारा अंतिम लक्ष्य है। मैं कौन हूँ, मुझे कहाँ जाना है वह बात भरतभाईने गुरुहरि काकाजी के पास सीखी। काकाजी की हरेक आज्ञा को सारधार मानकर जीवन जीते है। मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है ऐसे अपना सबकुछ छोडकर उन्होंने काकाजी को राजी किया है। अब हमें उनकी हाँ में हाँ मानकर जीवन जीना है। करीब ५३ साल हो रहे है पवई के सभी संतभाईयों साथ में है। मेरी प्रकृति उनसे बहुत अलग है, फिर भी हम सब आज भी एकसाथ है। वही अक्षरपुरुषोत्तम का सिद्धांत है। हमें अपने गुरु के पास शुन्य बनकर जीना है। जब हम गुरु

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar

को अपनेआप पर अधिकार करने देंगे तो हाँ में हाँ सहज ही हो पायेगा। जो काम कोई नहीं कर सकता वह साधु ही कर सकता है। ऐसे संत का प्रागट्यदिन हम मना रहे है। तो गुरु के वचन में हम जीवन जीते हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज हम भरतभाई का ७१वाँ प्रागट्यदिन मना रहे है, लेकिन वो १७ साल के दिखते है। उनका जन्म १९७४ की साल में हुआ। तो उसमें हम १७ डालेंगे तो ७१ होगा। ऐसे गुरुहरि काकाजी के साथ उनका सच्चा मिलन हुआ। वे पढाई में भी बहुत माहिर थे। गणित

P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar

में उन्हें पूरे मार्कस आते थे। उनके अक्षर भी मोती के दाने जैसे सुंदर है। भगवद्गीता में ७०० श्लोक है। करीब १७ हजार अक्षर उसमें आते है। गुजरात के एक संत मोरारी बापुजीने एक सभा में बोला था कि कृष्ण भगवानने अर्जुन को ७०० श्लोक में से एक ही शब्द यानि 'हाँ' सीखा दिया। तो अध्याय १८ में 'करिष्ये वचनम् तव' वह दृढ करवा दिया। वो हाँ में हाँ का सूत्र लेकर हमें अर्जुन बनकर हमारा सबकुछ भरतभाई को सौंप देना है। अक्षरपुरुषोत्तम को धारण किये हुए ऐसे वे गुणातीत स्वरुप है। भगवान स्वामिनारायणने हमें ब्रह्मरुप बनाने इस पृथ्वी पर जन्म लिया और ऐसे भरतभाई जैसे गुणातीत संत को काकाजीने हमें भेट दी। ऐसे दिव्य आशीर्वाद भरतभाई आज हमें दे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी को पहलीबार मिला और मन में ऐसा तय हो गया कि मैं काकाजी का हूँ और वे मेरे है। मेरे साथ काकाजी का ऐसा अनोखा संबंध हो गया कि उन्होंने कभी भी मुझे डाँटा नहीं था। 'करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...' ऐसे भजन की कडी के मुताबिक सच में वो ही काम कर रहे है और नाम हमारा हो रहा है। हम सभी संतभाईयों के साथ से सब काम सहज ही हो रहे है। आज रमेशभाई और महेन्द्रबापु को याद करते है। बापुने महापूजा का एक यंत्र बनाया था उसमें मेरा नाम लिखा था। राजुभाई भट्ट भी बडे थे फिर भी मुझे आगे करते थे। अश्विनभाई की दासत्व की भक्ति है। अरुणभाई भी ऐसे थे कि सबकुछ व्यवस्था वो करते थे और नाम मेरा होता था। हमारी पवई की बहनों को भी धन्यवाद देते है इतने साल से सभी एक साथ मिलकर सेवा करते है। दिनकरभाई हमारे पिता समान है। वे ज्ञान का भंडार है। ऐसे सभी गुणातीत संतों का जितना माहात्म्य समझे उतना कम है। आज के दिन मैं एक ही सूत्र देता हूँ जिससे हाँ में हाँ हो जायेगा। जो हमें काकाजीने ही बताया है। वे कहते थे कि आप जहाँ रहते है, काम करते है वहाँ ४ हरिभक्तों के साथ आत्मीयता करना। उनमें महाराज तथा अपने गुरु का दर्शन करना। दो जन के पास अपना छोडना सीख जायेंगे तो हाँ में हाँ सहज ही दृढ हो जायेगा। तो हे काकाजी, आपने हमें बहुत सुखी रखा है तो हम हमेशा आनंद करते रहे ऐसी प्रार्थना।

अंत में संभाजी नगर मंडल की ओर से विशिष्ट हार भरतभाई को पहनाया।

केक कटिंग के बाद भरतभाई के ७१ प्रवचनो की विशिष्ट Audio Clip का अनावरण हुआ।

❊ शनिवार, दि. १५ को ब्र.स्व. अक्षरविहारीस्वामीजी के प्रागट्यदिन निमित्त पवई से प.पू. दिनकरभाई और अन्य संतभाईयों खास सांकरदा पधारे थे। सांकरदा से प.पू. बापुस्वामीजी, हरिधाम से प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी, निर्मलस्वामीजी, पू. दासस्वामीजी और संतों, कंथारिया से पू. विज्ञानस्वामीजी, अनुपम मिशन से सद्गुरु संत प.पू. रतिकाका तथा संतभाईयों, दिल्ली से पू. सुहृदस्वामीजी तथा स्थानिक हरिभक्तों की उपस्थिति में बडी भव्यता तथा भक्तिभाव से यह उत्सव मनाया गया।

P.P. Aksharvihariswamiji's Pragatyadin celebration at Sankarda

पवई मंदिर की ओर से संतभाईयोंने अक्षरविहारीस्वामीजी की मूर्ति को हार अर्पण किया।

❊ मंगलवार, दि. २५ फरवरी को प.पू. निर्मलस्वामीजी और पू. प्रियदर्शनस्वामीजी 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे।

P.Nirmalswamiji and P.Priyadarshanswamiji at "Akshardham" Temple, Powai

उसी दिन योगी डिवाईन सोसायटी, सद्भाव फाउन्डेशन और रोटरी क्लब के सहयोग से कर्जत के कोशले गांव में ६२ लडकीयों को साईकल और पालसदरवाडी. नासरापुर, कोटिंबेवाडी गांवों में लोगों की सुविधा के लिये शौचालय का लोकार्पण हुआ तथा पालसदरवाडी में छोटे बच्चों को कपडे दिये गये। पवई की ओर से प.भ. जिज्ञाबहन, पू. संदीपभाई, सद्भाव फाउन्डेशन की ओर से कु. नीताबहन दोशी और श्री. मधुभाई शेठने स्वयं उपस्थित रहकर इस कार्य को भक्तिभावपूर्वक सफल बनाया।

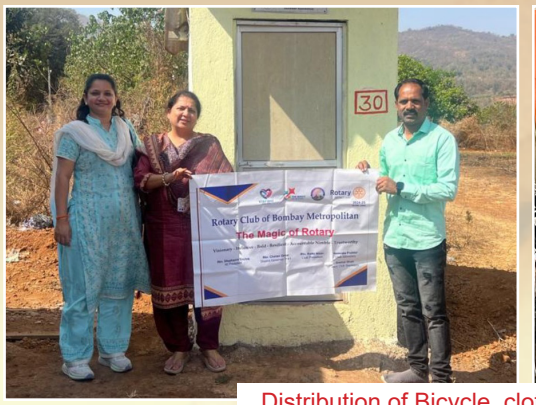

Distribution of Bicycle, clothes and opening of Toilet at villeges of Karjat

❊ शनिवार, दि. ०१ मार्च को गुरुहरि काकाजी महाराज के लाडले वरिष्ठ संतभाई अक्षरनिवासी प.पू. राजुभाई भट्ट का ७६वाँ प्रागट्यदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में संतभाईयों, संतबहनों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाया गया।

તા. ૩૧/૦૧/૨૦૨૫

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈના ૭૧મા પ્રાગટ્યપર્વે

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈ!

સાધુતા, સરળતા, સ્વધર્મ અને સહજતા જેવી
આધ્યાત્મિક ભાવનાઓનો મહાકુંભ એટલે ભરતભાઈનું જીવન...
સચ્ચાઈ, સાલસતા, શિસ્ત અને સાદગીનો પાવન સંગમ,
એટલે પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈનું જીવન...
મિતભાષી ખરા એટલે વ્યર્થ વાણીનો વિલાસ નહીં,
કોઈની મજાક, મશ્કરી કે ઠેકઠી નહીં,
કોઈનુંય મનદુઃખ થાય કે સ્વમાન ઘવાય એવું સંભાષણ તો ઠીક,
પણ એકાદ વાક્ય કે ટકોર પણ નહીં...
સદાય સત્ય, પ્રિય ને હિતકર વાણીનો જ વૈભવ,
જીવન એ જ ઉપદેશ, છતાંય ક્યાંય યોગ્ય વર્તનનો
હઠાગ્રહ કે દુરાગ્રહ નહીં...
સર્વત્ર પ્રભુના જ કર્તાહર્તાપણાનો સહજ સ્વીકાર,
એટલે કોઈપણ પ્રસંગે અતિરેકતા કે ઉદાસીનતા નહીં અને
છતાંય ભાવશૂન્ય કે લાગણીશૂન્ય નહીં...
ભક્તોનો અખૂટ મહિમા તેથી હરેક વ્યક્તિ પ્રત્યે સંબંધની જ દૃષ્ટિ,
એના દોષ કે સ્વભાવ, વિચાર કે વૃત્તિઓ પ્રત્યેની,
ગણત્રીપૂર્વકની વ્યાવહારિક રીતિ કે નીતિ નહીં...
દૃષ્ટિ વેધક ખરી, પણ દાહક નહીં,
સમસ્ત અસ્તિત્વ સાલસ અને કોઈનીય
ઉન્નતિ કે વિકાસમાં બાધક નહીં...

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈ!

પહેલેથી જ અભ્યાસમાં તેજસ્વી, પણ ક્યાંય પોતાની એ વિશિષ્ટતાનો
દેખાવ, આડંબર કે ધજાગરો નહીં,
પોતાની એ આવડતનો કેવી રીતે સત્કર્મમાં સદ્ઉપયોગ થાય,
એ જ ચિંતા અને સતત ચિંતન...
પહેલેથી જ સ્વાવલંબી, એટલે કોઈના પર કોઈપણ કામ માટે
લાચારી કે પરવશતા નહીં,
ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજે સહુના આદર્શ તરીકે માન્યતા આપી,
છતાંય ક્યાંય એ માટેનો વિશેષાધિકાર કે ગુરૂપણાનો ગર્વ નહીં,
ગર્વ એક જ કે કાકાજી જેવા ગુણાતીત પુરુષે
ગ્રહણ કર્યા, પોતાના માન્યા તેની ધન્યતાનો...
વડીલો પ્રત્યે આદર, સાથીદારો સાથે સખ્ય અને
ભક્તો પ્રત્યે વાત્સલ્ય...
પણ ક્યારેય તેનો અણછાજતો આવિર્ભાવ કે
અનુચિત અભિવ્યક્તિ નહીં...
એક સરખો અસ્ખલિત ઝરણા જેવો નિર્મળ પ્રેમ,
સહુનાં જાળવે યોગ ને ક્ષેમ...
ભરોસો આપે વડીલબંધુની જેમ, માર્ગદર્શન આપે માવતરની જેમ...
એમના સંબંધની સાર્થકતા જાણે રજત ને હેમ!

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈ!

ઉપદેશમાં વધુ પડતા શબ્દોનું લાલિત્ય કે સાહિત્યિક શૃંગાર નહીં,
પણ સચોટતા અને સચ્ચાઈની સ્પષ્ટ પ્રતીતિ મળે,
સાંભળનારને જેમ લસલસતો શીરો ઊતરે ગળે...
જે ઉદરમાં નહીં, પણ હૈયામાં ઊતરીને સળવળે...
એવી ધારદાર ને સ્પષ્ટ મુદ્દાસર વાત,
વાંચનાર કે લખનારને ક્યારેય ન કરવી પડે માનસિક કસરત કે
અધ્યાર રહી ગયેલ વિચાર કે શબ્દોનો વ્યાયામ...
હંમેશાં ટૂંકો, સરળ ને મુદ્દાસર આયામ...
ઉપદેશમાંય નિજ વર્તનનો હુંહાટો કે હુંકાર નહીં,
પોતાની આગવી વિશિષ્ટતાનો સીધો કે આડકતરો પ્રચાર નહીં,
વિષયાંતર પણ નહીં, વિષયનો બિનજરૂરી વિસ્તાર પણ નહીં...
કારણ, જેવું જીવન એવો જ ઉપદેશ,
સ્પષ્ટ, સરળ, મુદ્દાસર, સંક્ષિપ્ત સંદેશ હંમેશ!

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈ!

કોઈપણ સંજોગોમાં રઘવાટ, ઉચાટ, આવેશ કે ઉદ્વેગ નહીં,
દરેક પ્રસંગે સહજ સ્થિરતાભર્યો, સમતાયુક્ત આત્મિક વેગ,
હંમેશાં ધૂન-ભજન-સ્વાધ્યાયના અનુરાગી ને આગ્રહી,
નિર્ણયશક્તિ અડગ અને અફર...
પ્રભુમાં અતૂટ ને અખૂટ વિશ્વાસની ધજા ફરકતી રહે ફરફર...
કોઈની સાથે અણબનાવ કે મનભેદ નહીં,
કોઈની સાથે વિવાદ કે વિખવાદ નહીં,
હંમેશાં સંવાદના જ સુકાની અને સંવાદિતાના પ્રહરી,
જાણે અતલ સાગરની સપાટી પરની શિતળ, સૌમ્ય લહરી,
અજાતશત્રુ અને સહુનાય સુહૃદ, સાથીદાર, મિત્ર,
સદ્ભાવનાઓના સહજ, સ્વાભાવિક, સન્મિત્ર!

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈ!

આપના પ્રાગટ્યદિને અર્પો આશિષ કંઈ લેશ,
આપના જેવો સ્વીકાર, સહકાર અને સકારાત્મક ભાવોનો આચાર,
અમ સહુમાં આવે, જીવન એવું બને અમારું,
જેથી આપ રાજી થઈ જાઓ સહજ સ્વભાવે...

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Bhajan Sandhya on 7th January at Megaragus Hall, Chandivali. (2) Poshi Poonam and Anoopam Mission-Mogri Temple Patotsav on 13th January. (3) Jholi Sabha on the auspicious occasion of Makarsankranti and P.P. Jyotiben's Smrutidin at "Akshardham" Temple, Powai on 14th January. (4) Ayodhya Ram Mandir first Patotsav celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 22nd January. (5) Patotsav Mahapooja at Guruhari Kakaji Maharaj's Pragatyasthan (Birth Place) at Nadiad on 26th January. (6) P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at CETTM MTNL Ground, Powai on 1st February. (7) 22nd Patotsav Vidhi of "Akshardham" Temple, Powai and Guruhari Kakaji Maharaj's 73rd Sakshatkar Din on 3rd February at "Akshardham" Temple, Powai. (8) Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar on 7th February. (9) P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar on 8th February. (10) Pragatyadin celebration of B.S. Aksharvihariswamiji at Sankarda on 15th February. (11) P. Nirmalswamiji, P. Priyadarshanswamiji at "Akshardham" Temple, Powai on 25th February. (12) Distribution of 62 Bicycle to Girls at Kashele Village-Karjat. Toilet for Villegers for Palsadarvadi, Nasrapur and Kotibevadi and distribution of clothes to Kids to Palsadarvadi from Yogi Divine Society, Sadbhav Foundation and Rotary Club on 25th February. (13) P.P. Rajubhai Bhatt's 76th Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 01st March. (14) Article for P.P. Bharatbhai's 71st Pragatyadin on 31st January.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta